Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

भारत निर्माण में गाँव और गौ की भूमिका : महात्मा गाँधी की दृष्टि में

डॉ0 मधु शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, नानकचन्द ऐंग्लों संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

सारांश– भारतभूमि पर समय–समय पर ऐसे विराट् व्यक्तित्व पुण्यात्माओं ने जन्म धारण किया जिनमें महात्मा गाँधी जी अग्रणी हैं। उनके व्यक्तित्व में योद्धा की निर्भयता, इंद्रिय–निग्रह द्वारा अर्जित आत्मिक शक्ति, विद्वान् की प्रखरता, साधक की निष्ठा, तपस्वी की तेजस्विता, राजनीतिज्ञ की कुशलता और भक्त की विह्वलता का सुन्दर समन्वय था। ग्रामोद्धार हेतु गाँधी जी ने योजनाएँ आयोजित कीं उनमें स्वावलम्बन हेतु प्रशिक्षण प्रमुख है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण समाज के विकास हेतु शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिये जिससे ग्राम्य समाज अपनी शारीरिक क्षमताओं का पूर्णतया उपयोग कर सके। गाँधी जी का कहना था ''गाय दया धर्म की मूर्तिमती कविता है। वह लाखों करोड़ों हिन्दुस्तानियों को पालने वाली माता है। इस गाय की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है।''

मुख्य शब्द– स्वावलम्बन, अस्पृश्यता, प्रखरता, ग्रामोद्धार, गोरक्षा।

इतिहास का अध्ययन करने पर विदित होता है कि भारतभूमि पर समय–समय पर विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न दिव्य पुरुष अवतरित हुए हैं, जिनमें से महात्मा गांधी कनिष्ठिकाधिकष्ठित हैं। उनके रूप में एक ऐसी दिव्य विभूति पृथ्वीतल पर अवततरित हुई, जिसने अपनी असाधारण प्रतिभा से समग्र विश्व को चमत्कृत कर दिया। उन प्रातः स्मरणीय युगपुरुष, बापू राष्ट्रपिता इत्यादि विविध नामों से अभिहित महात्मा गांधी से कौन अपरिचित है? जिन्होंने न केवल भारत का अपितु समग्र विश्व का हित किया। सन् 1869 में अक्टूबर मास की द्वितीया तिथि में माता पुतली से उनका अवतार वास्तव में इसी प्रकार हुआ जैसे जगदम्बा से गणेशजी का एवं माता देवकी से श्रीकृष्ण का

अथो गणेशं जगदम्बिकेव, श्रीकृष्णचन्द्रं खलु देवकीव।
विश्वात्मकं विश्वहिते रतञ्च, सा मोहन पुत्रमसूत काले।।
भूमौ न जाने कति वा भवन्ति, सुताः स्ववंशोन्नति–हेतु भूताः
सर्वात्मना विश्वविनोदहेतुर्बालस्तु जातो ननु मोहनोऽयम्।[1]

अर्थात पृथ्वी पर अपने वंश की उन्नति के कारण बनकर जाने कितने पुत्र उत्पन्न होते रहते हैं, परन्तु यह बालक सारे संसार के विनोद एवं हित का कारण बनकर उत्पन्न हुआ था।[2] उनके जीवन पर संस्कृत कवि भतृहरि की यह उक्ति पूर्णरूपेण चरितार्थ होती है–

'स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्[3]

आइन्सटीन ने गाँधी के विषय में लिखा है–

"आने वाली पीढ़ियाँ कठिनाई से विश्वास करेंगी कि हाड़ माँस का बना ऐसा व्यक्ति भी कभी इस भूतल पर आया था"

वस्तुतः गांधी ज़ी युगपुरुष थे वह भारत ही नहीं एशिया की भी जागृति के प्रतीक थे। उनके व्यक्तित्व में योद्धा की निर्भयता, विद्वान, की प्रखरता, साधक की निष्ठा, तपस्वी की तेजिस्वता, राजनीतिज्ञ की कुशलता और भक्त की विह्वलता का बड़ा ही सुन्दर समन्वय हुआ है। अपने इन गुणों से उन्होंने समग्र विश्व को प्रभावित किया''[4]

प्रारम्भ में भारत को ग्राम–प्रधान देश माना गया है क्योंकि भारत की अधिकांश जनता ग्रामों में निवास करती है अतः गांधी जी यह मानते थे कि भारत की आत्मा ग्रामों में बसती है। इसलिए ग्रामोत्थान से देशोत्थान होगा। उन्होंने इतिहास को उद्धृत करते हुए कहा कि जब–जब भी राष्ट्र को आवश्यकता हुई तब–तब ग्रामों ने अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया है। 1857 के अधिकांश सेनानी–लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे नाना साहब, कुँवरसिंह आदि अन्य अगणित सैनिक गाँवों के ही थे। आधुनिक युग में भी गाँवों ने अनेक नवरत्न राष्ट्र को दिए हैं। डा0 राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, लोकमान्य तिलक, आचार्य विनोबा भावे, चन्द्रशेखर अजाद, भगत सिंह, रामप्रसाद–बिस्मिल, आदि अनेक राष्ट्रभक्त महापुरुष गाँवों की ही देन है भले ही उनके कार्यक्षेत्र शहर रहे हों। अपने अत्यधिक व्यस्त जीवन में भी ग्रामीण बन्धु राष्ट्रभक्तों के स्वागत से नहीं चूकते थे। जब भी कोई राष्ट्रभक्त नेता गाँवों में आता था तो असंरव्य नर–नारी उनके स्वागत के लिए और उनका भाषण सुनने के लिए उमड़ पड़ते थे।

''अतः गाँवों का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। इन गाँवों में अशिक्षा है, बीमारी है, बेरोजगारी है तथा गरीबी है। 'इन गाँवों की दशा सुधारो, चर्खा कातो, हिंसा के भाव छोड़ो' इससे हमें आन्तरिक स्वतन्त्रता मिलेगी फिर हम आत्मिक बल और स्वतन्त्रता के सहारे अंग्रेजी सत्ता को भी समाप्त कर सकेंगे''

ग्रामों की जनता का जीवन–निर्वाह कृषि पर आधारित होता है। अतः कृषकों की स्थिति सुधारने के लिए उन्होंने अनेक संस्थाएँ स्थापित करने का सुझाव दिया। गाँव स्वावलम्बी हों. एतदर्थ उन्होंने लघु–उद्योग–धन्धों को प्रोत्साहित किया। ग्रामोद्योग विकासार्थ उन्होंने ग्रामोद्योग संघ स्थापित किए।

'कुमारप्पा' का कथन है– कि ''गाँधी अपने को ग्रामवासी ही मानते थे और गाँव में बस गये थे, गाँव की जरूरतें पूरी करने के लिए उन्होंने अनेक संस्थाएँ कायम की थी और ग्रामवासियों की शारीरिक, आर्थिक सामाजिक और नैतिक स्थिति सुधारने की उन्होंने भरसक कोशिश की थी।''[5]

गाँधी जी को गाँवों की स्थिति सुधारने की. सर्वाधिक आवश्यकता अनुभव हुई। उनकी यह आकांक्षा उनके ग्राम–विषयक कार्यों एवं योजनाओं में दृष्टिगत होती है। ग्रामोद्धार हेतु गाँधी जी ने जो योजनाएँ आयोजित कीं उनमें स्वावलम्बन हेतु प्रशिक्षण प्रमुख है उन्होंने कहा कि ''ग्रामीण समाज के विकास हेतु शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे ग्राम्य समाज अपनी शारीरिक क्षमताओं का पूर्णतया उपयोग कर सके। अतः वह मानते थे वर्तमान शिक्षा–पद्धति में विद्यार्थियों द्वारा उपयुक्त उपकरणों जैसे–पट्टी, पेन्सिल, पैन के बजाय वे उपकरण या औजार होने चाहिए जिनका प्रयोग वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्त्यर्थ करना सीख़ सकें''[6]

अपनी गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि को प्राप्त करने का भारत पर एकमात्र यही उपाय है कि उसके गाँव पुनः स्वावलम्बी हों ग्रामीणों का सर्वांगीण विकास हो।

देश पर विदेशी प्रभुत्व स्थापित होने से पहले गाँव स्वावलम्बी थे। अपनी आवश्यकताओं की सभी वस्तुएँ तो वे खेतों में पैदा करते थे अथवा झोड़ियों में फलने फूलने वाली वस्तुओं से उनकी पूर्ति हो जाती थी" उन्होंने कहा ''ग्रामीणों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत करते हुए गाँवों की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाये। उनको प्राकृतिक चिकित्सा हेतु जागरूक किया जाये जिससे आर्थिक रूप से उनको चिकित्सकों पर निर्भर न रहना पड़े।''

ग्रामीणों को पौष्टिक अहार की आवश्यकता पर भी गाँधी जी ने विशेष बल दिया। गाँधी जी ने कहा कि गाँवों को स्वावलम्बी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वे ग्रामोद्योगों को अधिक से अधिक उन्नत बनायें जिससे न केवल उनकी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हो बल्कि वे अन्य आवश्कताओं की पूर्ति हेतु धन भी उपार्जित कर सकें। राष्ट्र के उत्थान एवम् स्वावलम्बन हेतु ग्रामों के पुनरुज्जीवन की आवश्यकता है, सभी के मन में यह दृष्टिकोण होना चाहिए, इस दृष्टिकोण का आधार स्वदेशी की भावना ही है।

कृषि भारत का प्राणरूप व्यवसाय है जो इस देश को अभी तक बचाये हुए है। कृषि व्यवसाय से विदेशी आक्रान्ताओं के आने पर भी देश स्वावलम्बी बना रहा। एक महिला को स्वल्पवस्त्रों में देखकर गाँधी जी ने उससे कहा–

"चर्खा कातकर अपने वस्त्र स्वयं तैयार करो''–

"कुरू भद्रे सदा सूत्रं हितं ते कर्तने ध्रुवम्''

इतना ही नहीं उन्होंने स्वयं भी स्वल्पवस्त्रों में रहने का दृढ़ निश्चय किया।

"यावन्न वेष्टिता सर्वे, बान्धवो मे यथोचितम्।
स्थास्यामि स्वल्पवेशोऽहम इति तेन व्रतम् धृतम्।।

इन्होंने कहा कि ''खादी जब तक गरीब और अमीर सब लोगों के उपयोग की सार्वजनिक वस्तु नहीं बनती, तब तक हमें चैन न पड़ना चाहिए।''

''अपने पहनने की चीज में अपने हाथों की कला से जो निर्दोष आनन्द मिला है वह लाखों स्वर्णजटित चूड़ियों में नही।''

''खादी देश के सब प्रजाजन की आर्थिक स्वतन्त्रता एवं समानता के आरम्भ का सूचक है। खादी के मायने हैं, सर्वव्यापी स्वदेशी भावना, जीवन की सारी आवश्यकताएँ हिन्दुस्तान में से ही और वह भी ग्रामवासियों की मेहनत और बुद्धि के प्रयोग द्वारा प्राप्त करने का निश्चय, ''यों तो चर्खा जड़ वस्तु है उसमें शक्ति संकल्प से आती है। हम उसकी साधना करें।''

''यह सत्य है कि सारी चीजें चर्खे से ही निकलती हैं। ग्राम–उद्योग–संघ उसी में से निकला है। अस्पृश्यता निवारण एवं नई तालीम उसी के फल हैं मेरी प्रवृत्तियों की ग्रहमाला का वही सूर्य है।"[7]

गाँधी जी ने स्वावलम्बन की शिक्षा देते हुए कहा अपना काम हम स्वयं करें, सेवक–सेव्य का भाव न रहे, सब समान हों तभी सब एक–दूसरे की परेशानियों को समझ सकेंगे, उनकी व्यथा–वेदना का अनुभव कर सकेंगे और एक दूसरे के दुःखों को दूर कर सकेंगे।

गाँधी जी ने कहा कि ग्राम स्वराज की मेरी कल्पना यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातन्त्र होगा, जो अपनी अहम् जरूरतों के लिए अपने पड़ोसी पर निर्भर नहीं करेगा। प्रत्येक गाँव अपनी जरूरत का सभी अनाज और कपड़ों के लिए कपास पैदा करें। कृषक अवशिष्ट ज़मीन में उपयोगी फसलें बोकर बेचकर आर्थिक लाभ उठायेगा किन्तु नशीले पदार्थों के उत्पादन से बचेगा, सत्याग्रह और असहयोग के शस्त्र के साथ अहिंसा की सत्ता ही ग्रामीण समाज का शासन–बल होगी।

गाँधी की कल्पना की इकाई गाँवों मे मजबूत से मजबूत होगी। इसके अन्तर्गत गाँवों में हज़ारों आदमी रहेंगे। ऐसे गांव को स्वावलम्बन के आधार पर अच्छी तरह संगठित किया जाये तो वह बहुत कुछ कर सकता है। इसी क्रम में गाँधी ने पंचायती राज की वकालत की और कहा कि आज़ादी नीचे से शुरू होनी चाहिए।

उन्होंने बड़े दावे के साथ अपनी पुस्तक "मेरे सपनों का भारत" में कहा है––

''अगर हिन्दुस्तान में हर एक गाँव में कभी–पंचायती राज कायम हुआ तो मैं अपनी इस तस्वीर की सच्चाई साबित कर सकूँगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनों बराबर होंगे। या यों कहिए कि न तो कोई पहला होगा, न आखिरी", उनके अनुसार जब पंचायती राज स्थापित हो जायेगा तब लोकमत ऐसे भी अनेक काम कर दिखायेगा, जो हिंसा कभी नहीं कर सकती।

ग्राम स्वायत्तशासी, स्वतन्त्र तथा अधिकांशतः आत्म निर्भर होंगे इसका अर्थ यह नहीं है, कि वे एक दूसरे से पृथक होंगे, और इस प्रकार के एक ढीले–ढाले संघ में संगठित होंगे संघ का आधार शक्ति न होकर नैतिक होगा। संघ के पास पुलिस या सैन्य–शक्ति नहीं होगी। एक अहिंसात्मक समाज का जो आर्थिक स्वरूप होगा, वह आज के राज्य से बहुत भिन्न होगा, क्योंकि उसमें बड़े नगर, पुलिस कानूनी न्यायालय, जेल, भारी उद्योग एवं वाहन का कोई स्थान न होगा। नवीन समाज में जीवन बहुत सरल होगा, सभ्यता ग्रामीण होगी, नागरिक नहीं।

निरूक्तकार आचार्य यास्क ने "देवो दानाद्वा द्योतनाद्वा दीपनाद्वा''[8] कहकर दान करने वाले द्योतित एवं चमत्कृत करने वाले समग्र प्राणियों व्यक्तियों एवं प्राकृतिक उपादानों को "देव" के रूप में स्वीकार किया है।

गायें भी हमें निःस्वार्थ भाव से हमारी आवश्यकता की वस्तुएँ देती हैं। अतः गाँधी जी ने गाय को भी देवत्व की श्रेणी में रखा है। वे गाय को भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट अंग मानते थे। उनका विचार था कि जब तक गायों की रक्षा नहीं होगी तब तक न तो हमारी गरीबी दूर होगी, न वास्तविक स्वराज्य ही प्राप्त होगा–

"मैं मानता हूँ कि जिस तरह अस्पृश्यता के दोष से मुक्त हुए बिना, हिन्दू–मुस्लिम एकता के साधे बिना, और खादीधारी हुए बिना हम स्वराज नहीं ले सकते, उसी तरह से मुझे कहना चाहिए कि जब तक हम यह नहीं जान लें कि गोरक्षा किस प्रकार करनी चाहिए, तब तक स्वराज्य जैसी कोई चीज नहीं है।''[9]

ऋग्वेद के दशम मण्डल के 169 वें सूक्त के द्वितीय मन्त्र में भी कहा गया है– "जो गायें हमारे रक्त और वीर्य में वृद्धि करें हमें तेज देती हैं उन गायों को हमें सुखी रखना चाहिए।''[10]

याः सरूपा विरूपा एकरूपा यासामग्निरिष्टया नामानि वेद।
या अंगिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ।।

उनका कहना था– "गाय दया धर्म की मूर्तिमंत कविता है। इस गरीब और शरीफ जानवर में हम केवल दया ही उमड़ती देखते हैं। यह लाखों–करोड़ों हिन्दुस्तानियों को पालने वाली माता है। इस गाय की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है।[11]

गोपालन निःस्वार्थ भाव से गांवों में ही होता है; शहरों में तो लोग स्वार्थवश दूध हेतु ही पशु पालते है; दूध देना बन्द करने पर या तो बेच देते हैं या लोग उन्हें खुला छोड़ देते हैं। मांसाहारी सम्प्रदाय के लोग उनकी हत्या करके अपनी उदरपूर्ति करते हैं। गौ–भक्तों की भावनाएँ आहत होती हैं परिणामतः साम्प्रदायिक दंगे भड़कते हैं। उसका समाधान यही है कि गायों को कसाइयों को न बेचें सड़कों पर खुला न छोड़ें जिससे देश में शान्ति व्यवस्था बनी रहे कतिपय गौ–भक्तों ने गोशालाओं की भी व्यवस्था की हुई है किन्तु वहाँ केवल गौओं को ही रखा जाये अन्य पशुओं को नहीं। गांधी जी का कहना था कि ''–ऐसी गौशालाएँ बस्ती से दूर खुले में हों, उनमें भैंस, भेड़ बकरी आदि को न पाला जाये। उनमें गोबर आदि फेंका जाये, उनमें नमूने का दुग्धालय हो।''

गोबर और गोमूत्र औषधि–निर्माण के उपयोग में आता है किन्तु कतिपय ग्रामीण अनभिज्ञता के कारण गोबर के उपले बनाकर जला डालते हैं। गाय का गोबर खेतों में खाद के रूप में प्रयुक्त होने पर भूमि को अत्यन्त उर्वरक बना देता है।

गाँधी जी का अभिमत था हिन्दुओं का मुख्य धर्म है गौरक्षा उन्हें मुनष्य के सारे विकासक्रम में सबसे अलौकिक प्राणी प्रतीत हुई। हिन्दुस्तान में गाय ही मनुष्य का सबसे सच्चा साथी एवं सबसे बड़ा आधार है। हमारे पुराणों एवं इतिहास में कामधेनु की महत्ता दयार्द्रता, दानशीलता का प्रमाण मिलता है, वास्तव में गाय विधाता की मनुष्यों के लिए कीमती भेंट है। जिस अज्ञात ऋषि या द्रष्टा ने गौपूजा चलायी वास्तव में वह बहुत बड़ा चिन्तनशील विचारक था। ऋषि का ऋषित्व उसके दर्शन (चिन्तन) से ही सार्थक होता है– "ऋषिर्दर्शनात्''[12]

गौ माता जन्मदात्री माँ से भी बढ़कर है क्योंकि माँ तो अपने शिशु को साल –दो साल दूध पिलाकर आजीवन उससे सेवा की अपेक्षा रखती है। किन्तु गाय निःस्वार्थ भाव से सेवा करती है। माँ की तो बीमारी में सेवा करनी पड़ती है किन्तु गौमाता जीवन पर्यन्त हमारी अटूट सेवा ही नहीं करती अपितु उसके मरने के बाद भी उसके चर्म, हड्डी एवं सींग आदि से अनेक लाभ उठाते हैं। अतः गौमाता हमारे लिए पूज्य है।

निष्कर्षतः भारत–निर्माण में गांधी जी ने गाँव एवं गौ को अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्त्व माना है। संस्कृत कवि कहता है–

"परोपकारैकधियः स्वसुखाय गतस्पृहाः।
जगद्हिताय जायन्ते मानवाः केऽपि भूतले।

वस्तुतः धन्य हैं वह महात्मा गाँधी, जिनकी मृत्यु पर "बर्नाडशा' ने लिखा था–

"इससे पता चलता है कि बहुत नेक बनना कितना कठिन है।" यद्यपि महात्मा गाँधी भौतिक शरीर से हमारे मध्य में नहीं है किन्तु यशः शरीर से सदैव अमर रहेंगे।

"तं वन्दे मनुदेहधारिणमहम् गान्ध्यारव्यं देवं परम्।।

सन्दर्भ–

1. श्रीगान्धिचरितम्–श्लोक संख्या–11
2. वही–श्लोक–14
3. भतृहरि, नीतिशतकम्
4. बाबूराम जोशी–भारतीय नवजागरण का इतिहास
5. कुमारप्पा भारतन्–हमारे गाँव का पुनर्निमाण, पृ0–3
6. हिन्दी–नवजीवन
7. गाँधी जी–प्रार्थना–प्रवचन
8. आचार्य यास्क, निरुक्त, 7/15
9. गाँधी जी–गोसेवा, पृ0–12
10. ऋग्वेद 10, 169, 2
11. गाँधी जी–गोसेवा, पृ0–6
12. आचार्य यास्क, निरुक्त–2.11